खर्च नहीं करने का औचित्य

2. **श्री मंजीत कुमार सिंह**—दैनिक समाचार–पत्र में दिनांक 6 नवम्बर, 2012 के अंक में प्रकाशित "खर्च शून्य पर माँग रहे और पैसे" शीर्षक को ध्यान में रखते हुए क्या मंत्री, गन्ना उद्योग विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि क्या यह बात सही है कि वित्तीय वर्ष 2012–13 में गन्ना उद्योग के लिये स्वीकृत 7,500 लाख रुपये में एक रु0 भी खर्च नहीं किये गये हैं, जिससे राज्य में गन्ना विकास प्रभावित हो गया है, यदि हाँ, तो सरकार बजट में स्वीकृत राशि को गन्ना विकास में खर्च नहीं करने का क्या औचित्य है और इसके लिये कौन दोषी है ?

---

कार्रवाई करना

3. **श्री अवनीश कुमार सिंह**—दैनिक समाचार–पत्र में दिनांक 12 नवम्बर, 2012 को प्रकाशित शीर्षक "निहाल हुआ बाजार, धनतेरस पर सोलह अरब का हुआ सर्राफा कारोबार" के आलोक में क्या मंत्री, वाणिज्य–कर विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि—

(1) क्या यह बात सही है कि दिनांक 11 नवम्बर, 2012 को धनतेरस के अवसर पर राज्य में 1,600 करोड़ रुपये के सोना–चांदी एवं हीरे लोगों द्वारा खरीदे गये हैं ;

(2) क्या यह बात सही है कि 1,600 करोड़ रुपये के कारोबार के बावजूद सरकार को मात्र 50 करोड़ की बिक्री का ही वैट प्राप्त हुआ है ;

(3) यदि उपर्युक्त खंडों के उत्तर स्वीकारात्मक हैं, तो क्या सरकार राज्यहित में कर चोरी करने वालों पर कौन–सी कार्रवाई करने का विचार रखती है, यदि हाँ, तो कबतक, नहीं, तो क्यों ?

---

पटना :
दिनांक 03 दिसम्बर, 2012 (ई०)।

लक्ष्मी कान्त झा,
प्रभारी सचिव,
बिहार विधान–सभा।

बि०स०मु० (एल०ए०), 156–डी०टी०पी०–450